महिला राजमिस्त्रियों के लिये

शौचालय निर्माण–मार्गदर्शिका

प्रस्तावना

प्रत्येक गांव, शहर, जिला, प्रदेश एवं देश को खुले में शौच मुक्त बनाने एवं स्वच्छता के लिये बड़े स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। लेकिन आज भी ग्रामों में ऐसे कई परिवार हैं जिनके यहां शौचालय नहीं है। इसके अलावा बहुत से ऐसे परिवार भी हैं, जो शौचालय होने के बावजूद खुले में शौच के लिए जाते हैं। शौचालयों का उपयोग नहीं होने के जो कारण हैं, उनमें शौचालय का सही से निर्माण न हो पाना प्रमुख कारण है। शौचालय निर्माण में राजमिस्त्री की भूमिका महत्वपूर्ण है। अतः राजमिस्त्री को शौचालय निर्माण में प्रशिक्षित होना होना बेहद जरूरी है।

आमतौर पर राजमिस्त्री के पेशे को पुरूष प्रधान माना जाता रहा है। लेकिन ऐसा नहीं है कि निर्माण कार्यों में महिलाओं की कोई भागीदारी नहीं है। बल्कि निर्माण कार्यों में अकुशल श्रमिक के रूप में कार्य करने वालों में महिलाओं की संख्या पुरूषों से कहीं अधिक है। परन्तु ज्यादतर महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कम मजदूरी दी जाती है। यदि महिलाओं को प्रशिक्षण मिल जाए और उन्हें अवसर दिये जायें तो वे भी राजमिस्त्री का कार्य सफलतापूर्वक कर सकती हैं। घर, परिवार की स्वच्छता में भी महिलायें, पुरूषों की तुलना में अधिक जिम्मेदार होती हैं। घर में खाना बनाने से लेकर, घर की साफ–सफाई, पानी भरना जैसे सभी कार्यों में महिलाओं की भूमिका प्रमुख है।

मध्यप्रदेश के तीन जिले पन्ना, रायसेन और सीहोर में स्वच्छता सुविधाओं को बेहतर बनाने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से सिड़बी एवं समर्थन द्वारा सक्रिय महिला उद्यमी तैयार करने की पहल की जा रही है। इसी कड़ी में महिलाओं को प्रशिक्षित कर कुशल राजमिस्त्री बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

शौचालय निर्माण में महिला राजमिस्त्री की भूमिका से निर्माण कार्य की गुणवत्ता और उपयोगिता को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। साथ ही महिलायें स्वच्छता दूत के रूप में स्वच्छता सुविधाओं के अधिकतम उपयोग के लिये लोगों को जागरूक एवं प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगी।

पुस्तिका में दी गई जानकारी ग्रामीण महिलाओं को ध्यान में रखते हुए सरल एवं सहज भाषा में तैयार की गई है। पठन सामग्री को रूचिकर बनाने के लिये इसे एक कहानी का रूप दिया गया है। आशा है कि यह पुस्तिका राजमिस्त्री के रूप में कार्य करने वाली या करने की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिये सहायक एवं उपयोगी साबित होगी।

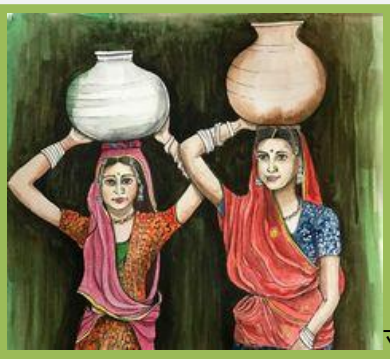

रज्जो बाई अपने 3 बच्चे तथा पति के साथ ग्राम मलकापुर में रहती हैं। रज्जो बाई का परिवार भूमिहीन है। पति–पत्नी मजदूरी कर परिवार का खर्चा चलाते हैं। बच्चे बड़े हो रहे हैं, रज्जो बच्चों को खूब पढ़ाना चाहती है। लेकिन वह ये सोचकर चिंतित हो जाती है कि अभी जो आमदनी है उसमें तो घर का खर्चा ही मुश्किल से चल पाता है। फिर बच्चों की अच्छी पढ़ाई के लिये पैसा कहाँ से आएगा?

एक दिन सुबह हेण्डपम्प पर पानी भरते समय रज्जो की मुलाकात कम्मो से होती है। रज्जो, कम्मो से पूछती है कि आजकल तो तुम दिखायी ही नहीं देती। कम्मो कहती है कि मैंने शौचालय बनाने के लिये राजमिस्त्री का प्रशिक्षण लिया था, अब में लोगों के यहां शौचालय निर्माण का काम करने जाती हूँ। इससे मेरी आमदनी भी बढ़ गई है। रज्जो को कम्मो की बात में उम्मीद की किरण नजर आयी। उसने कम्मो से ढेर सारे सवाल कर डाले। कम्मो ने कहा कि मैं तुझे पूरी बात बताऊँगी, लेकिन अभी नहीं, मुझे अभी काम पर जाना है। तू शाम को मेरे घर पर आना।

रज्जो उसी दिन शाम को कम्मो के घर पहुंच जाती है। फिर दोनों के बीच में जो चर्चा हुई उसका विवरण आगे दिया गया है –

रज्जो – बहिन, मैं अपने बच्चों को खूब पढ़ाना चाहती हूं, ताकि पढ़–लिखकर कोई अच्छा काम धंधा कर सकें। लेकिन अच्छी शिक्षा के लिये पैसा भी तो चाहिये, जो मेरे पास नहीं है। अच्छा हाँ तुम सुबह हेण्डपम्प पर बता रही थी कि, तुम राजमिस्त्री का कार्य करने लगी हो, जिससे तुम्हारी आमदनी बढ़ गई है!

कम्मो – हाँ, मैंने जो कुछ भी बताया था वह सब सच है।

रज्जो – लेकिन यह तो पुरूषों द्वारा किया जाने वाला काम है। यदि महिलायें इस काम को करेंगी तो लोग क्या कहेंगे? समाज क्या कहेगा ?

कम्मो – पहले मैं भी ऐसा ही सोचती थी। लेकिन राजमिस्त्री प्रशिक्षण के बाद मेरी सोच बदल गई। अब महिलायें चौके चूल्हे तक ही सीमित नहीं हैं। महिलायें ट्रेक्टर चलाने, हवाई जहाज उड़ाने, चुनाव लड़ने से लेकर देश की सुरक्षा के लिये सेना में भी जा रही हैं।

रज्जो – लेकिन मैं तो राजमिस्त्री के कार्य से बिल्कुल अंजान हूं, मैं कैसे कर पाऊंगी?

कम्मो – रज्जो तू ऐसा कैसे कह रही है। क्या तूने अपने घर में कभी तुलसी घर, दीवारों की छवाई–पुताई, मिट्टी के चूल्हे, गेहूं रखने के लिये कोठी नहीं बनायी है?

रज्जो – हाँ। ये सब काम तो मैंने किये हैं।

कम्मो – ये हुई न काम की बात। हमारे पास कुछ हुनर तो है, इसे बढ़ाने के लिये हमें और सीखना पड़ेगा।

रज्जो – लेकिन इस काम को सीखने में तो बहुत समय लगेगा ?

कम्मो – रज्जो नहीं, देख तुमने मकान या अन्य निर्माण कार्य में मसाला, गारा–मिटटी के तसले और ईंट देने का काम किया है। इसका मतलब राजमिस्त्री के कार्यों को तूने भले अपने हाथों से न किया हो लेकिन बहुत करीब से देखा है। इसलिये मुझे पूरा विश्वास है कि तू इस काम को बहुत जल्दी सीख लेगी।

रज्जो – क्या राजमिस्त्री का काम बहुत मेहनत वाला है?

कम्मो – नहीं, हम जो बोझा उठाने का काम करते हैं क्या वह कम मेहनत वाला है? बदले में हमें पुरूषों की तुलना में कम मजदूरी दी जाती है।

रज्जो – लेकिन एक बार गांव के सभी घरों में शौचालय बन जाने के बाद फिर राजमिस्त्री के लिये क्या काम होगा?

कम्मो – देख अब गांवों में भी पक्के मकान, सड़क निर्माण, पुलिया निर्माण जैसे काम चलते ही रहते हैं। हम इन कार्यों में भी राजमिस्त्री का काम कर सकते हैं। आसपास की पंचायतों में जाकर भी काम कर सकते हैं।

रज्जो – क्या तुम्हें आसानी से राजमिस्त्री का काम मिल गया था?

कम्मो – शुरूआत में थोड़ी परेशानी आयी, लेकिन जब मेरे द्वारा बनाए गए एक शौचालय को लोगों ने देखा तो अब मेरे पास काम की कोई कमी नहीं है।

रज्जो – राजिमिस्त्री के काम में तो ऊँचाई पर भी काम करना होता है, क्या तुम्हें डर नहीं लगता?

कम्मो – नहीं, शुरूआत में जरूर लगता था। वैसे भी तो हम ईंट और मसाला देने के लिये ऊपर चढ़कर काम करते ही हैं।

रज्जो – अच्छा बहिन ये बता – क्या घरों की तरह, शौचालय भी अलग–अलग डिजायन के बनाए जाते हैं?

कम्मो – हॉ, शौचालय भी अलग–अलग डिजायन के होते हैं। शौचालय का डिजायन स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर करना चाहिये।

रज्जो – अपने गांव या आसपास के गांवों में किस डिजायन के शौचालय का निर्माण करना बेहतर होगा।

कम्मो – हमारे क्षेत्र में सेप्टिक टैंक (बड़े गडढे का शौचालय) एवं दो सोख्ता गडढे वाले शौचालय का निर्माण किया जाता है।

रज्जो – इन दोनों में भी कौन सी डिजायन का शौचालय बेहतर है ?

कम्मो – इन दोनों में दो सोख्ता गडढे वाले शौचालय को बेहतर माना जाता है।

रज्जो – क्यों ?

कम्मो – दो सोख्ता गडढे वाला शौचालय सेप्टिक टैंक वाले शौचालय की तुलना में कम जगह एवं कम लागत में बन जाता है। दो सोख्ता गडढे वाले शौचालय में मल खाद में परिवर्तित हो जाता है जबकि सेप्टिक टैंक वाले शौचालय मल खाद में परिवर्तित नहीं होता बल्कि कीचड़ के रूप में रहता है।

रज्जो – दोनों शौचालयों की डिजायन में और क्या अंतर है ?

कम्मो – सैप्टिक टैंक में मल चूंकि खाद में परिवर्तित नहीं होता है इसलिये इसे खाली करते समय गंदगी एवं बदबू फैलती है और खर्चीला भी है। जबकि दो सोख्ता गडढे वाले शौचालय में मल खाद के रूप में परिवर्तित हो जाता है जिससे इसमें कोई बदबू नहीं रहती, इसे घर के लोग ही खाली कर सकते हैं।

रज्जो – मुझे ये तो समझ आ गया कि किस डिजायन का शौचालय बनवाना अच्छा है। तो फिर ये भी बताइये कि की यह बनता कैसे है?

कम्मो – थोड़ा धीरज तो रख, मैं तुझे चरणवार पूरी जानकारी दूंगी। सबसे पहला चरण होता है सही स्थान का चयन करना।

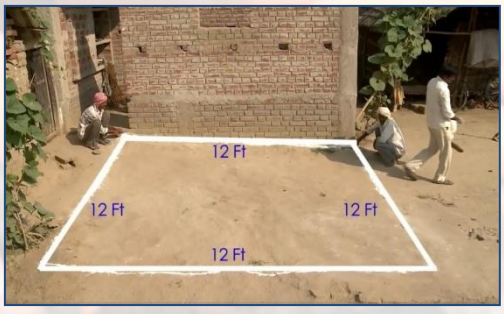

रज्जो – सही स्थान के चयन का मतलब कैसा स्थान?

कम्मो – शौचालय निर्माण के लिये लगभग 144 वर्ग फिट जगह की जगह चाहिये। ऐसे स्थान का चयन नहीं करना चाहिये जहां बारिश में जल भराव होता हो या पानी बहकर जाता हो। इससे गडढों में पानी भर सकता है।

रज्जो – क्या चट्टान वाली जगह पर शौचालय बना सकते हैं ?

कम्मो – नहीं, चट्टान वाले स्थान पर गडढा खोदने में परेशानी होगी तथा गडढे के अंदर का पानी बाहरी दीवारों द्वारा सोखा नहीं जाएगा। जिसके कारण गडढा जल्दी

भर जाएगा। नदी, नाले के किनारे वाले स्थान का चयन भी नहीं करना चाहिये।

रज्जो – स्थान चयन में और किन बातों का ध्यान रखना चाहिये?

कम्मो – शौचालय का स्थान घर के पास हो ताकि परिवार के महिला–पुरूष, बच्चे, बुजुर्ग एवं यदि कोई दिव्यांग सदस्य है तो वह भी बिना किसी परेशानी के हर मौसम में शौचालय का उपयोग कर सके।

रज्जो – यदि पास में कोई जल स्रोत या मकान की दीवार हो तो क्या करें ?

कम्मो – शौचालय के गडढे जल स्रोतों से, कम से कम 10 से 15 मीटर तथा मकान की दीवार से 2 से 3 फिट दूर होना चाहिये।

रज्जो – क्या शौचालय निर्माण हेतु बड़े पेड़ के पास वाले स्थान का चयन कर सकते हैं?

कम्मो – नहीं, पेड़ की जड़े शौचालय के गडढों को नुकसान पहुंचा सकती है।

रज्जो – अच्छा शौचालय हेतु स्थान चयन की बात तो समझ में आयी अब आगे क्या करना होगा।

कम्मो – स्थान का चयन हो जाने के बाद शौचालय का लेआउट या माप देने का काम किया जाता है।

रज्जो – लेकिन मैं तो पढ़ी–लिखी हूं नहीं, तो फिर माप देने का काम कैसे करूंगी?

कम्मो – इसके बारे में हमें प्रशिक्षण में बताया गया है। जो महिला फीते या टेप को नहीं पढ़ सकती वे देशी तरीके से हाथ, बीता, अंगुल का उपयोग कर माप दे सकती हैं।

रज्जो – लेकिन माप तो फिट या इंच में होगी तो मैं माप देने के लिये देशी तरीकों को कैसे उपयोग में ला सकती हूं ?

कम्मो – एक वयस्क महिला के हाथ की कोहनी से लेकर मध्यिका (बीच की अंगुली) के छोर तक की लम्बाई 16 से 18 इंच होती है। इसी प्रकार एक बीता लगभग 8 से 9 इंच एवं 3 अंगुल 2 से 3 इंच के बराबर होता है। उदाहरण के लिये यदि हमें 2 फिट की माप करना है तो एक हाथ और एक बीता मापना होगा।

रज्जो – ठीक है अभी तो समझ में आ गया, लेकिन माप करते समय कोई समस्या आ जाये या समझ में न आये तो क्या करना चाहिये ?

कम्मो – यदि माप देते समय किसी भी प्रकार की परेशानी आए तो मौके पर मौजूद किसी पढे–लिखे महिला–पुरूष का सहयोग ले सकते हैं।

रज्जो – क्या माप देते समय शौचालय बनवाने वाले परिवार से किसी प्रमुख सदस्य (महिला या पुरूष) को उपस्थित रहना चाहिये?

कम्मो – स्थान का चयन करते समय और माप देते समय शौचालय बनवाने वाले परिवार के किसी सदस्य का उपस्थित रहना जरूरी है। शौचालय कहां बनेगा, गडढे कहां बनेंगे, कमरा कहां बनेगा, दरवाजा किस तरफ होगा जैसे निर्णय परिवार की सहभागिता से करना चाहिये।

रज्जो – शौचालय का माप देने की शुरूआत कहां से करनी चाहिये?

कम्मो – शौचालय का माप देने की शुरूआत दोनों गडढों के माप देने से करना चाहिये।

रज्जो – गडढों की माप कैसे दी जाती है?

कम्मो – जिस स्थान पर कमरा बनाना है उस स्थान से लगभग 2 मीटर दूर एक स्थान को केन्द्र मानकर मापी गई 28 इंच की लकड़ी या धागे के एक सिरे को उस स्थान पर रखें। दूसरे सिरे को गोल घुमाते हुए एक गडढे की माप हेतु चूना या राख डालें।

रज्जो – अच्छा दूसरे गडढे की माप देने के लिये क्या करना होगा?

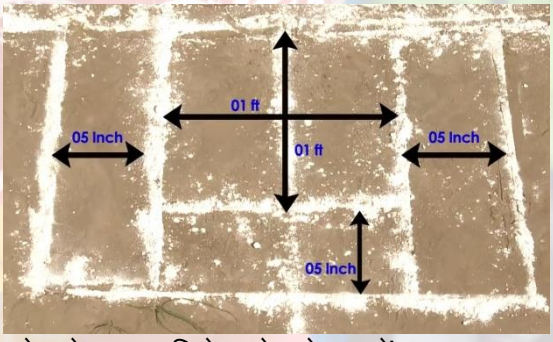

कम्मो – 28 इंच के माप वाली लकड़ी या धागे को पहले गडढे के केन्द्र में रखें, अब 28 इंच की चौगुना लम्बाई अर्थात 112 इंच की दूरी पर दूसरे गडढे के केन्द्र बनायें। 28 इंच की माप वाली लकड़ी या धागे के एक सिरे को केन्द्र में रखकर दूसरे सिरे को गोल घुमाते हुए दूसरे गडढे की माप हेतु चूना या राख डालें।

रज्जो – दोनों गडढे की माप के बाद किसकी माप देंगे?

कम्मो – अब जंक्शन बॉक्स की माप देना है?

रज्जो – ये क्या होता है?

कम्मो – जंक्शन बॉक्स शौचालय घर एवं गडढों के बीच में बनता है। जब शौचालय पेन में पानी डालकर मल को बहाया जाता है तो वह मुर्गा से होता हुआ जंक्शन बॉक्स में पहुंचता है। जंक्शन बॉक्स से मल गडढे में जाता है।

रज्जो – क्या मल दोनों गडढों में जाएगा?

कम्मो – नहीं, ऐसे में तो दोनों गडढे एक साथ ही भर जाएंगे। एक समय में मल के बहाव को किसी एक गडढे में खोला जाता है तथा दूसरे गडढे में जाने वाले पाइप के मुंह को जंक्शन बॉक्स के अंदर से बंद कर दिया जाता है।

रज्जो – ये तो बहुत अच्छी व्यवस्था है, अच्छा इसकी माप कैसे देंगे?

कम्मो – शौचालय घर को सोख्ता गडढों से जिस दिशा में जोड़ा जाना है, उस दिशा में शौचालय घर की दीवार से लगभग 10 इंच तथा सोख्ता गडढों से लगभग 1 मीटर की दूरी बनाते हुए अंदर से अंदर, 12 से 15 इंच लम्बे–चौड़े जंक्शन बॉक्स के निर्माण हेतु चूने या राख की सहायता से माप दें।

रज्जो – अच्छा ये भी हो गया, अब आगे क्या करेंगे?

कम्मो – अब शौचालय के महत्वपूर्ण भाग अर्थात शौचालय घर की माप देंगे। शौचालय घर के अंदर की लम्बाई–चौड़ाई 4×4 फिट होना चाहिये। अतः इस हिसाब से चूना या राख की सहायता से लाइन डालकर निशान लगा लें।

रज्जो – क्या कमरे की लम्बाई–चौड़ाई को कम या ज्यादा कर सकते हैं?

कम्मो – लम्बाई–चौड़ाई बढ़ाने से लागत बढ़ेगी वहीं कम करने से शौचालय के उपयोग में असुविधा होगी।

रज्जो – क्या और भी कोई माप देना बाकी है ?

कम्मो – नहीं, माप देने का काम पूरा हो गया है, अब हम निर्माण पर बात करेंगे।

रज्जो – उसकी शुरूआत शौचालय के किस भाग के निर्माण से की जाएगी?

कम्मो – जैसे हमने माप देने की शुरूआत गडढों से की थी, उसी प्रकार निर्माण का काम भी गडढों से शुरू करेंगे।

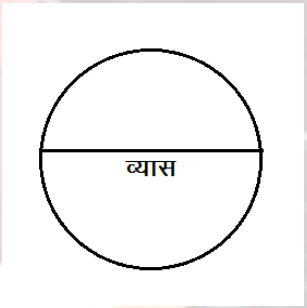

रज्जो – गडढा तैयार होने के पर उसके अंदर की चौड़ाई और गहराई कितनी रहना चाहिये?

कम्मो – गडढे के अंदर का व्यास 1 से 1.2 मीटर एवं गहराई 1.20 मीटर होगा।

रज्जो – व्यास का मतलब क्या है?

कम्मो – 1 से 1.2 मीटर व्यास का मतलब इतनी लम्बी लकड़ी को लेकर यदि गडढे की चौड़ाई में अंदर–अंदर घुमाएंगे तो वह आसानी से घूमना चाहिये।

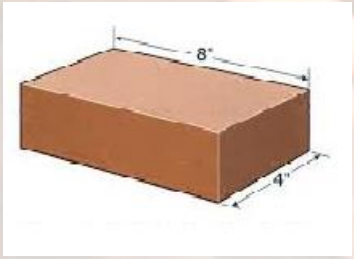

रज्जो – गडढे की चुनाई कितने इंच मोटी होगी?

कम्मो – गडढे की चुनाई 4 इंच मोटी होगी।

रज्जो – क्या सभी रददे की चुनाई 4 इंच मोटाई में होगी?

कम्मो – नहीं, गडढे की दीवारों में मजबूती के लिये सबसे नीचे के रददे की चुनाई 8 से 10 इंच मोटी करना चाहिये।

रज्जो – तो क्या इसके बाद वाले सभी रददों की चुनाई 4 इंच मोटी होगी?

कम्मो – हॉ, लेकिन कुछ रददों की चुनाई के समय छेद छोड़े जाएंगे और कुछ में नहीं।

रज्जो – अच्छा, तो किन रददों में छेद छोड़ना है और किनमे नहीं?

कम्मो – नीचे वाले रददे के ऊपर के दो रददे, बीच का एक रददा और सबसे ऊपर के तीन रददों की चुनाई में छेद नहीं छोड़े जाएंगे। शेष सभी रददों की चुनाई हर ईंट के बाद 1 से 1.5 इंच का छेद छोड़ते हुए की जाएगी।

रज्जो – क्या सभी प्रकार की जमीन पर, गडढे की चुनाई में इसी तरह छेद छोड़े जाते हैं?

कम्मो – हाँ, छेद तो छोड़े जाते हैं, लेकिन काली मिटटी वाली जमीन पर गडढे की चुनाई करते समय छेद का आकार 1/2 इंच ही रखा जाता है।

रज्जो – अच्छा कम्मो ये बता, क्या गडढे के अंदर तली में खुले भाग को भी सीमेंट का मसाला डालकर पक्का किया जाएगा?

कम्मो – इसकी जरूरत नहीं है, यदि गडढे का तल कच्चा रहेगा तो ज्यादा से ज्यादा पानी मिटटी द्वारा सोख लिया जाएगा।

रज्जो – अच्छा, ये छेद क्यों छोड़े जाते हैं?

कम्मो – छेदों के माध्यम से गडढे के अंदर का पानी आसपास की मिटटी सोख लेती है तथा मिटटी में मौजूद जीवाणु मल को खाद में बदल देते हैं।

रज्जो – यदि ऐसी बात है तो सभी रददों में छेद क्यों नहीं छोड़े जाते ?

कम्मो – यदि सभी रददों में छेद छोड़ेंगे तो गडढे की दीवारों को मजबूती कम हो जाएगी और गडढा जल्दी गिर जाएगा।

रज्जो – क्या गडढे की गहराई को 1.20 मीटर से अधिक रख सकते हैं?

कम्मो – नहीं, गहराई बढ़ाने से जो जीवाणु मल को खाद में बदलने करने का काम करते हैं उन्हें अनुकूल हवा एवं तापमान नहीं मिल पाएगा जिससे मल को खाद में बदलने का कार्य ठीक से नहीं होगा।

रज्जो – क्या, दोनों गडढे ऊपर से खुले ही रहेंगे?

कम्मो – नहीं, यदि गडढों को खुला रखेंगे तो बदबू फैलेगी तथा कोई दुर्घटना भी हो सकती है। इसलिये गडढों को पत्थर की फर्शी या लोहा, सीमेंट, रेत एवं गिटटी का ढक्कन बनाकर ढका जाता है।

रज्जो – यदि पत्थर की फर्शी का उपयोग करना है तो उसका आकार क्या होगा? और कितनी फर्शी लगेंगी?

कम्मो – एक गडढे को ढकने के लिये 2×4 फिट की दो फर्शी लगती हैं। अतः दोनों गडढे के लिये इस आकार की 4 फर्शी लगेंगी। एक बात और है, दोनों फर्शी के जोड़ों को सीमेंट का मसाला लगाकर सीलबंद कर देना चाहिये ताकि बदबू बाहर न आये।

रज्जो – अच्छा तो फिर ये भी बताओ कि ढक्कन बनाना हो तो वह कैसे बनाया जाएगा?

कम्मो – ढक्कन बनाने के लिये 6 मिमी मोटी लोहे की छड़ को गोलाकर में मोड़ा जाता है। गोले के अंदर का व्यास 50 इंच होना चाहिये। इसके बाद गोले में हर 6 इंच की दूरी पर तार की सहायता से छड़ों को आड़ा बांधा जाता है। इसे ढक्कन के लिये जाल बनाना कहते हैं।

रज्जो – अब इसमें मसाला कैसे डालेंगे?

कम्मो – मसाला डालने के लिये जाल को किसी समतल लकडी के पटे, लोहे की चादर, या पक्की फर्श पर रखा जाता है, ताकि ढक्कन की सतह एकदम समतल व चिकनी रहे।

रज्जो – मसाले बनाने में सीमेंट, बालू एवं गिटटी मात्रा कितनी–कितनी होगी?

कम्मो – मसाला 1:2:4 के अनुपात में बनाया जाएगा, अर्थात सीमेंट 1 भाग, बालू 2 भाग एवं गिट्टी 4 भाग में लेकर पानी डालकर अच्छी तरह मिलाया जाएगा।

रज्जो – मसाला कितना मोटा डालना होगा ?

कम्मो – ढक्कन के लिये 3 इंच मोटा मसाला पर्याप्त है।

रज्जो – क्या ढक्कन की तराई भी करनी होगी ?

कम्मो – हॉ, बिना तराई के तो ढक्कन में मजबूती नहीं आएगी, इसलिये कम से कम 7 दिनों तक दिन में 2 से 3 बार तराई करना होगा।

रज्जो – मैंने गांव में कुछ पुराने शौचालयों में सीमेंट के खड़े पाइप लगे देखे हैं, क्या इन गडढों में भी वैसा पाइप लगाना होगा?

कम्मो – नहीं, सोख्ता गडढे वाले शौचालयों में इसकी आवश्यकता नहीं है। बल्कि पाइप लगाने से बदबू बाहर आएगी और मल के खाद में बदलने का कार्य भी प्रभावित होगा।

रज्जो – क्या गडढे से संबंधित कोई और बात है जो मुझे जाननी चाहिये?

कम्मो – नहीं, मैंने गडढे से संबंधित पूरी जानकारी तुझे बता दी है।

रज्जो – तो फिर, इसके बाद आगे कौन सा काम करना होता है?

कम्मो – अब मैं तुझे शौचालय घर के चबूतरा निर्माण के बारे में बताने वाली हूं।

रज्जो – चबूतरा !

कम्मो – हॉ, चबूतरा। चबूतरा निर्माण में सीट, पैरदान एवं मुर्गा (जलबन्द) फिटिंग करना भी शामिल है। शौचालय का कमरा भी इसी चबूतरे के ऊपर बनाया जाएगा।

रज्जो – अच्छा। लेकिन कमरा बनेगा तो क्या इसकी नींव भी खोदनी पड़ेगी ?

कम्मो – दी गई माप के अनुसार 1.5 फिट (18 इंच) गहरी एवं 1 फिट (12 इंच) चौड़ी नींव की खुदाई करेंगे। अब नींव की मजबूती के लिये 1:4:8 के अनुपात में सीमेंट, रेत एवं गिटटी का 3–4 इंच मोटा मसाला बिछाएंगे।

रज्जो – दीवार की चुनाई कितनी मोटी होगी?

कम्मो – बिछाई गई मसाले की पर्त पर पहले रददे की चुनाई 10 इंच तथा इसके बाद वाले तीन रददों की चुनाई 4 इंच की मोटाई में की जाएगी।

रज्जो – अच्छा, चबूतरे की दीवार बनाने के बाद आगे क्या करेंगे?

कम्मो – अब सीट और मुर्गे की फिटिंग करेंगे। इसके लिये घर के मुखिया से पूछें कि वह सीट किस दिशा में फिट करवाना चाहता है।

रज्जो – क्या सीट और मुर्गा फिटिंग के समय भी माप की आवश्यकता पड़ती है?

कम्मो – हॉ। सीट के पिछले सिरे को उसके पीछे की दीवार से 9 इंच दूर और अगल–बगल की दीवारों से सेन्टर में रखते हुए सीट के

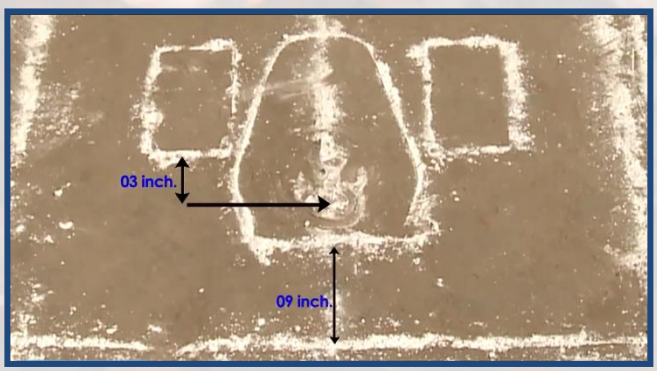

स्थान हेतु निशान लगा लें। अब सीट के पिछले वाले हिस्से में मुर्गा फिट करने के लिये लगभग 15 इंच लम्बा–चौड़ा गहरा गडढा बनाऐं। मुर्गे के एक सिरे को पीवीसी पाइप के द्वारा जंक्शन बॉक्स से जोड़ते हुए 1:6 के मसाले से अपने स्थान पर पक्का कर दें।

रज्जो – क्या मुर्गा फिटिंग के समय कोई विशेष सावधानी रखनी होती है?

कम्मो – मुर्गा फिटिंग ऐसे की जानी चाहिये कि 20 मिमि का जलबन्द हमेशा बना रहे। मुर्गे को जंक्शन बॉक्स से जोड़ने वाले पाइप का ढाल 1:10 से 1:15 होना चाहिये।

रज्जो – अच्छा सीट कैसे फिट करेंगे?

कम्मो – सीट फिट करने के लिये उसके निचले हिस्से के मुंह को मुर्गे के मुंह के अंदर अच्छे से फिट करें। सीट की ऊपरी सतह को समतल रखते हुए 1:6 के मसाले एवं ईंट की सहायता से जगह पर पक्का कर दें।

रज्जो – लेकिन सीट के आसपास खाली जगह बच जाएगी उसे कैसे भरेंगे?

कम्मो – बची हुई खाली जगह को मिटटी, ईंट के टुकड़े एवं रेत डालकर सीट के लेबिल पर समतल कर लें। थोड़ा पानी डालकर दुरमट से ठोंक दें ताकि मिटटी, ईंट के टुकड़े एवं रेत अच्छे से सैट हो जाये। अब 1:6:8 के मसाले से फर्श को पक्का कर दें। ध्यान रहे कि चारों ओर से फर्श का ढाल सीट में रहे।

रज्जो – पैरदान कैसे लगाएंगे?

कम्मो – पैरदान को सीट के पिछले भाग से 3 इंच आगे की ओर 'V' आकार में फिट करें।

पैरदान फर्श की सतर से ऊपर उठे रहना चाहिये।

रज्जो – अभी तो जंक्शन बॉक्स का निर्माण बाकी है, उसे कब बनाएंगे?

कम्मो – आगे हम जंक्शन बॉक्स ही बनाने वाले हैं। जंक्शन बॉक्स अंदर से अंदर, 12 से 15 इंच लम्बा–चौड़ा होता है। जंक्शन बॉक्स के तल की मजबूती के लिये 4 इंच गहरा गडढा कर उसमें 1:6 का मसाला बिछायें।

रज्जो – जंक्शन बॉक्स को गडढों से कैसे जोड़ा जाएगा?

कम्मो – 4 इंच मोटे, दो पीवीसी पाईप की मदद से दोनों सोख्ता गडढों को जंक्शन बॉक्स से जोड़ेंगे। जंक्शन बॉक्स में मुर्गे से आने वाला पाईप को ऊपरी सतह पर तथा सोख्ता गडढों में जाने वाले पाईप को निचली सतह पर रखा जाता है।

रज्जो – जंक्शन बॉक्स की दीवार कितनी मोटी होगी?

कम्मो – जंक्शन बॉक्स की दीवार 4 इंच मोटी तथा 3 रददे की होगी। जंक्शन बॉक्स का अंदरूनी भाग 'Y' आकार में रखा जाता है। जंक्शन बॉक्स को अंदर से ढाल को सोख्ता गडढों में जाने वाले पाइपों की ओर रखते हुए 1:6 के मसाले से चिकना कर दिया जाता है ताकि मल रूकने की संभावना न रहे।

रज्जो – क्या जंक्शन बॉक्स को ऊपर से ढका जाएगा?

कम्मो – जंक्शन बॉक्स को फर्शी से ढक देना चाहिये। इसके अलावा एक पाइप के मुंह को भी जंक्शन बॉक्स से बंद कर देना चाहिये, ताकि दोनों गडढे एक साथ न भरें।

रज्जो – शौचालय का कमरा कैसे बनेगा ?

कम्मो – यह तय हो जाने के बाद कि दरवाजा किस दिशा में लगाना है, दरवाजे को चबूतरे की दीवार पर उस दिशा में बल्ली की सहायता से खड़ा कर दें।

सामान्यतः शौचालयों में ढाई फिट चौड़ा और साढ़े पांच फिट ऊँचा दरवाजा लगाया जाता है।

रज्जो – कमरे की दीवारों की चुनाई कितनी मोटी होगी? और कमरे में हवा और रोशनी की क्या व्यवस्था होगी?

कम्मो – दीवारों की चुनाई 4 इंच मोटी होगी। हवा एवं प्रकाश की व्यवस्था के लिये पीछे एवं अगल–बगल की दीवारों ऊपर की ओर 4 इंच चौड़े 4–5 छेद छोड़े जाते हैं।

रज्जो – दीवार की ऊंचाई कितनी होगी?

कम्मो – सामने की दीवार 6.5 फिट तथा पीछे की दीवार 5. 5 फिट ऊँची रहेगी।

रज्जो – कमरे की छत किस चीज से बनेगी?

कम्मो – कमरे की छत के लिये लोहे, सीमेंट सीट या फायबर सीट का उपयोग कर सकते हैं। सीमेंट कांक्रीट की पक्की छत भी बना सकते हैं।

रज्जो – शौचालय को सुन्दर बनाने के लिये और क्या कर सकते हैं?

कम्मो – शौचालय को सुन्दर बनाने के लिये अंदर एवं बाहर की दीवारों में प्लास्टर कर चूना या डिस्टेंपर से पुताई कर सकते हैं। प्लास्टर से शौचालय को साफ रखने में भी मदद मिलती है।

रज्जो – क्या शौचालय के पास पानी के लिये भी कोई व्यवस्था होनी चाहिये?

कम्मो – बिल्कुल सही बात है। शौचालय के उपयोग एवं हाथ धोने के लिये पानी की टंकी या कोई अन्य व्यवस्था तथा साबुन अवश्य होना चाहिये।

रज्जो, कम्मो द्वारा दी गई जानकारी से बहुत प्रभावित हुई और उसने अपनी आमदनी बढ़ाने के लिये राजमिस्त्री का काम करने का पक्का इरादा कर लिया।

अनुलग्नक–1

शौचालय निर्माण की सांकेतिक माप तालिका

क्र.	विवरण	माप
1	लीच पिट का व्यास बाहर से	56 इंच
2	हनीकोम्ब चुनाई के बाद लीच पिट के अंदर का व्यास	48 इंच
3	लीच पिट की गहराई	48 इंच
4	लीच पिट की चुनाई	1:4 के मसाले से
5	लीच पिट के ऊपर का ढक्कन	2×4 फिट की 2 फर्शी प्रति पिट
6	शौचालय के कमरे का अंदर का साइज	4×4 वर्ग फिट
7	पीछे की दीवार की ऊँचाई	5.5 फिट
8	सामने की दीवार की ऊँचाई	6.5 फिट
9	कमरे की दीवार	4 इंच मोटी, मसाला 1:4 के अनपात में
10	छत	5.5×5.5 वर्ग फिट के लिए सीमेंट/ ऐस्वेस्टस अथवा टीन की चादर
11	दरवाजा (लोहे का)	2.5 फिट चौड़ा और 5.5 फिट ऊँचा
12	शौचालय शीट	1 नग 32 डिग्री के स्लोप में पायदान सहित
13	मुर्गा (जलबन्द)	''एस'' टाईप
14	पी.वी.सी. पाईप	4 इंच व्यास का
15	जंक्शन बॉक्स निर्माण	अंदर ही अंदर 12 से 15 इंच, लम्बा–चौड़ा
16	रोशनदान	पीछे की दीवार एवं अगल–बगल की दीवार में
17	शौचालय के बाहर एक छोटी पानी की टंकी	साईज 24×24×24 इंच, दीवार की मोटाई 8–9 इंच, जमीन की सतह से लगभग 2–3 फिट ऊपर

अनुलग्नक–2

सेप्टिक टैंक एवं लीच पिट (सोख्ता गडढा) के निर्माण लागत की तुलना

सेप्टिक टैंक	**लीच पिट (सोख्ता गडढा)**
6 फिट लम्बे ×6 फिट चौंड़े ×6 फिट गहरे साइज के गडढे की अनुमानित लागत	1.2 मीटर बाहरी व्यास, 1 मीटर अंदर का व्यास तथा 1.2 मीटर गहरे गोलाकार के 2 गडढों की अनुमानित लागत
ईंट – लगभग 3000 नग, 5 रूपये/नग की दर से = 15000 रूपये	ईंट – लगभग 320 नग, 5 रूपये/नग की दर से = 1600 रूपये
रेत – 120 घनफिट, 35 रूपये/घनफिट की दर से = 4200 रूपये	रेत – 15 तसले, 20 रूपये/तसले की दर से = 300 रूपये
सीमेंट – 15 बेग, 320 रूपये/बैग की दर = 4800 रूपये	सीमेंट – 1 बेग, 320 रूपये/बैग की दर = 320 रूपये
गिटटी – 25 घनफिट, 25 रूपये/घनफिट की दर से = 625 रूपये	ढक्कन के लिये फर्सी 4 नग, 250 रूपये/नग की दर से = 1000 रूपये
मिस्त्री – 4 दिन, 350 रूपये प्रतिदिन की दर से = 1400 रूपये	मिस्त्री – 1 दिन, 350 रूपये प्रतिदिन की दर से = 350 रूपये
योग (1+2+3+4+5) = 26025 रूपये (उपरोक्त अनुमानित लागत में कॉलम एवं बिम की लागत शामिल नहीं है)	योग (1+2+3+4+5) = 3570 रूपये

अनुलग्नक–3

शौचालय का उपयोग एवं रखरखाव

1. शौच से पहले तसले (पैन) में थोड़ा सा पानी डाल दें, ताकि वह गीला हो जाये। इससे तसले (पैन) में मल नहीं चिपकता है।
2. शौच के बाद तेजी से पानी डालिये ताकि मल बह कर अंदर पाईप में चला जाये।
3. रूरल पैन की विशेषता है कि इसमें मल बहाने के लिये केवल 2–3 लीटर पानी ही पर्याप्त है।
4. मूत्र त्याग करने के बाद शौचालय में पानी अवश्य डालें ताकि किसी प्रकार की बदबू न आए।
5. शौचालय के बाहर पानी भरने के लिये टंकी अवश्य बनवायें तथा उसमें सदैव पानी भरकर रखें। पानी पास होने से शौचालय को साफ रखना आसान होगा। पानी की टंकी को हमेशा ढंककर रखें ताकि उसमें बाहर की गंदगी न जाये तथा कीड़े पैदा न हो।
6. शौच के बाद हाथों को साबुन से अवश्य धोयें, मिट्टी से नहीं। क्योंकि मिट्टी में कीटाणु होते हैं। साबुन से हाथ धोने से हम लगभग 40 प्रतिशत बीमारियों से बच सकते हैं।
7. शौचालय की सफाई सफाई के लिये राख या मिटटी का उपयोग करे। सफाई हेतु तेजाब, फिनाइल और साबुन जैसे रसायनिक वस्तुओं का इस्तेमाल ना करें। इससे गड्ढे में खाद बनने की प्रक्रिया पर असर पड़ता है।
8. शौचालय में गंदा कपड़ा, कूड़ा–करकट, बीड़ी–सिगरेट बिल्कुल न डालें।
10. ध्यान दें की बच्चे शौचालय में पत्थर, गेंद आदि न डालें इससे आपका शौचालय जाम हो जाता है। यदि तसला (पैन) जाम हो जाये तब तसले (पैन) के छेद में चिमटा या लकड़ी की सहायता से उसमे फंसी वस्तु को निकालें। तेज धार के साथ काफी मात्रा में पानी डालें जिससे छेद एवं नाली पूरी तरह खुल जाये।
12. इसके बावजूद भी यदि शौचालय का जाम नहीं खुले तो चैम्बर (जंक्शन बॉक्स) खोलकर नाली में बांस का टुकड़ा डालकर आगे–पीछे करें। साथ ही पैन मैं पानी डालें। ऐसा करने से जाम खुल जायेगा। यदि जाम फिर भी नहीं खुले तो संभव है कि गडढा भर गया हो। अतः गडढे की जांच करें।

अनुलग्नक–4

राजमिस्त्री कार्य में उपयोग आने वाले औजार एवं सुरक्षा उपकरणों के नाम तथा उपयोग

क्र.	औजार/उपकरण का नाम	उपयोग	औजार का चित्र
1	टेप (फीता)	माप के लिये	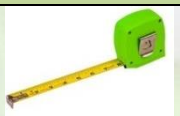
2	बड़ी कन्नी, छोटी कन्नी	बड़ी कन्नी दीवार जुड़ाई/चुनाई के लिये तथा छोटी कन्नी कम या संकरी जगह में जुड़ाई/चुनाई करने एवं प्लास्टर करते समय धार/किनार बनाने के लिये	
3	गोला	दीवार सीधी उठ रही है अथवा नहीं देखने के लिये	
4	सूत	दीवार चुनाई के समय ईंटों को सही जगह पर जमाने के लिये	
5	गुनिया	दीवार सही कोण में है अथवा नहीं देखने के लिये	
6	पंजा	छत एवं सीसी रोड आदि के निर्माण के समय मसाले को फैलाने के लिये	
7	रून्दा	प्लास्टर करने के लिये	
8	फंटी/पालिस कन्नी	प्लास्टर के समय फिनिसिंग के लिये	
9	लेविल पाईप	छत, फर्श का लेविल देखने के लिये	

10	सिप्रिट लेविल	लेविल की जांच करने करने हेतु	
11	फावड़ा	मसाला बनाने, मसाले को तसले में भरने तथा थोड़ी बहुत खुदाई के काम के लिये	
12	हथोड़ी	कील ठोकने या इस तरह के अन्य कार्य हेतु	
सुरक्षा उपकरण			
13	दस्ताने	सीमेंट से हाथों को पहुंचने वाले नुकसान से बचाने के लिये	
14	जूते	पैरों को कील एवं अन्य संभावित चोटों से बचाने के लिये	
15	हेलमेट	सिर की सुरक्षा के लिये	
16	जैकेट (एप्रन)	पहचान एवं सुरक्षा के लिये	
नोट : यदि ऊंचाई पर काम करते समय उपयुक्त सुरक्षा सुविधा एवं उपकरणों को प्रयोग में लायें ।			

अनुलग्नक–5

राजमिस्त्री कार्य की सावधानियां एवं राजमिस्त्री के अधिकार और सरकारी सुविधायें

राजमिस्त्री कार्य की सावधानियां

- ऊँचाई या गहराई में कार्य करते समय हमेशा हेलमेट और एप्रान या जैकेट पहन कर ही काम करें।
- सीमेंट से हाथों को किसी प्रकार का नुकसान न हो इसके लिये हाथों में दस्ताने पहनकर काम करें।
- काम करते समय ऐसे वस्त्र पहनें जिससे आप सुविधाजनक तरीके से काम कर सकें। अर्थात आपके पहने हुए वस्त्र न तो अत्यधिक ढीले हों और न ही बहुत चुस्त हों। सूती वस्त्र पहनना बहुत आरामदेय होता है।
- गर्भवती महिलाएं ऊँचाई एवं गहराई पर काम करने से बचें।
- कार्य स्थल पर अनैतिक व्यवहार या यौन शौषण की स्थिति में तुरन्त 100 नम्बर डायल कर पुलिस की सहायता लें।
- मासिक धर्म के समय खान–पान का विशेष ध्यान रखें।

राजमिस्त्री के अधिकार और सरकारी सुविधायें

1. समान काम के लिये महिला–पुरूष को समान दैनिक मजदूरी दिये जाने का कानूनी प्रावधान है।
2. एक दिन की मजदूरी (एक हाजिरी) का मतलब 8 घंटे के काम से होता है। इन 8 घंटों के बीच में भोजन अवकाश भी शामिल होता है।
3. किसी भी श्रमिक से उसकी इच्छा के विरूद्ध लगातार 6 दिन से अधिक काम नहीं करवाया जा सकता। सप्ताह में एक दिन का अवकाश अनिवार्य है।
4. बड़े स्तर पर होने वाले निर्माण कार्यों में कार्यस्थल पर श्रमिकों के लिए पेयजल, शौचालय व प्राथमिक उपचार किट उपलब्ध कराना नियोक्ता की जवाबदारी है।
5. बड़े स्तर पर होने वाले निर्माण कार्यों में धात्री माताओं के लिए सुरक्षित स्तनपान कराने की व्यवस्था होनी चाहिए।
6. पंचायत में मनरेगा योजना के तहत कराए जाने वाले निर्माण कार्यों में भी श्रमिकों के लिये प्राथमिक उपचार किट, श्रमिकों के आराम करने के लिये छायादार स्थान की व्यवस्था, पेयजल एवं 5 से अधिक छोटे बच्चों वाली मातायें कार्य कर रही हों

तो बच्चों की देख भाल के लिये एक महिला श्रमिक को नियुक्त करना और झूला घर की व्यवस्था करना पंचायत की जिम्मेदारी है।

7. कुशल श्रमिक के रूप में अपना पंजीयन करवाकर पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्यों में कुशल श्रमिक का कर सकते हैं।

8. बतौर निर्माण श्रमिक (कुशल, अर्द्धकुशल और अकुशल) एक वर्ष में कम से कम 90 दिन का काम करने वाले श्रमिक भवन एवं संनिर्माण कर्मकार मण्डल में अपना पंजीयन करवाकर मंडल की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

शौचालय निर्माण के चरण

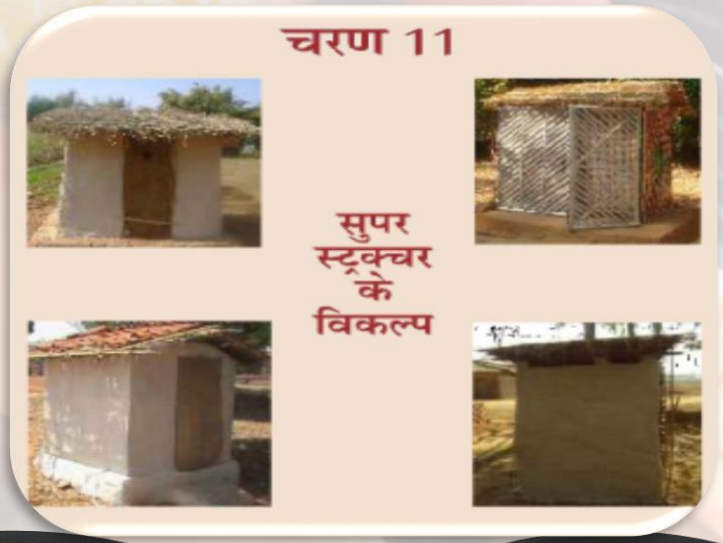

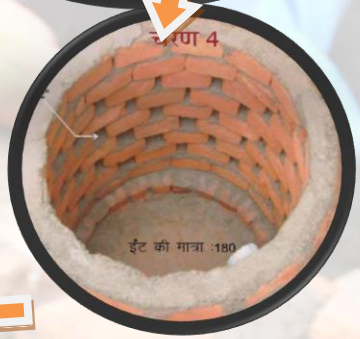

महिलाओं को मिला राजमिस्त्री का प्रशिक्षण

राजमिस्त्री के हुनर से मिटेगी गरीबी, आय होगी दोगुनी

पन्ना : स्वच्छ भारत मिशन के बेहतर क्रियान्वयन की दृष्टि से पन्ना जनपद की पंचायतों में समाजसेवी संस्था समर्थन द्वारा सराहनीय कार्य किये जा रहे है। इस दिशा में कार्य करते हुये संस्था ने 21 से 24 नवम्बर तक चिन्हित महिलाओं को चार दिवसीय राजमिस्त्री कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया है।

इस प्रशिक्षण में मनौर, कुड़ार, जनकपुर, तिलगंवा एवं लक्ष्मीपुर पंचायत की 24 महिलाओं ने सहभागिता करते हुये चार दिवसीय प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर जिला प्रशासन की ओर से स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण की जिला समन्वयक श्रीमति जयन्ती अहिरवार, अतिरिक्त कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अशोक चतुर्वेदी, अभियन्ता एस.के. समेले एवं पंचायत प्रकोष्ठ प्रभारी संजय सिंह ने सहभागिता की।

महिला राजमिस्त्रियों को संबोधित करते हुये अभियन्ता एस.के. समेले ने कहा कि अब तक राजमिस्त्री का काम केवल पुरुष करते आये है। अब आप सब प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी है और आप भी राज मिस्त्री हैं। यह राह आसन नहीं है पर लगन से काम किया जाये तो सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आप सतत रूप से कार्य करें और अभ्यास करते रहे ताकि आपकी क्षमता का विकास होता रहे।

अतिरिक्त कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अशोक चतुर्वेदी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि प्रशासन की ओर से प्रधानमंत्री आवास एवं अन्य निर्माण कार्यों को गति देने के उद्देश्य से राजमिस्त्रियों का 45 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। आप भी उस प्रशिक्षण मे सहभागिता करें ताकि आप लगातार 45 दिन काम करके अपने कौशल को और भी निखार सकें।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण की जिला समन्वयक जयन्ती अहिरवार ने कहा कि आप केवल शौचालय निर्माण ही नहीं उसके महत्व को भी समझे, हम समय-समय पर स्वच्छता ग्राहियों का प्रशिक्षण व बैठकें करते हैं। आप उन प्रशिक्षणों में सहभागिता करें और अपने ग्राम व पंचायत को स्वच्छ बनायें। आपने कौशल तो सीख लिया अब उसका उपयोग करें आपको जहां भी कार्य करने का अवसर प्राप्त हो आप काम जरूर करें। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुये समर्थन संस्था के क्षेत्रीय समन्वयक ज्ञानेन्द्र तिवारी ने कहा कि शासन की ओर से महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में लाने के लिये कई प्रयास किये जा रहे हैं। शासन ने पंचायत निकायों में 50 प्रतिशत पद महिलाओं के लिये आरक्षित किये हैं। पर हम देखते हैं कि बहुत कम महिलायें सक्रिय रूप से पंचायत प्रतिनिधि के दायित्व को निभा रही हैं। जिस तरह शासकीय सेवाओं के पदों पर होने वाली भर्ती में महिलाओं को आरक्षण प्रदान किया जाता है उसी प्रकार पंचायत निकायों में भी महिलाओं को आरक्षण का लाभ मिल रहा है। जिस तरह शासकीय सेवायें कर रही महिलायें अपने दायित्व को निभाती हैं उसी तरह पंचायत प्रतिनिधि के रूप में भी महिलाओं को अपने दायित्वों का निर्वहन बखूबी करना होगा। पंचायती राज व्यवस्था में ग्राम सभा को शक्ति दी गई है और सभा का कोरम महिलाओं की उपस्थिति के बिना पूरा नहीं होता हमारी महिला शक्ति को ग्राम सभा में अपने मुद्दे रखने चाहिये ताकि ग्राम के विकास में उनकी भी भूमिका हो।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में महिलाओं को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र व टूल किट प्रदान की गई। समापन अवसर में जिला प्रशासन के प्रतिनिधियों के साथ समर्थन संस्था के विषय विशेषज्ञ आशीष विश्वास, राज्य कार्यालय भोपाल से आये आदित्य वर्मा, कार्यक्रम समन्वयक राहुल निगम, आकाश श्रीवास्तव, स्वच्छता सखी कल्पना सिंह, कलेस्टर समन्वयक प्रदीप त्रिपाठी, कलेस्टर समन्वयक सपना कुशवाहा, कलेस्टर समन्वयक प्रीती जैन सीपा संस्था से कार्यक्रम समन्वयक प्रदीप पिड़िहा कलेस्टर समन्वयक चाली राजा पंचायत सचिव व प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिलायें मौजूद रही।

16 पन्ना स्टार

सतना, शुक्रवा

बुंदेलखण्ड में बदलाव की बयार : सम्मानपूर्वक आजीविका चलाने गरीब महिलाएं ले रहीं राजमिस्त्री का प्रशिक्षण

राजमिस्त्री पुरुषों के एकाधिकार को तोड़ेंगी महिलाएं

वर्तमान समय महिलायें किसी भी मामले में पुरूषों से पीछे नहीं है। जिन क्षेत्रों में सदियों से पुरूषों का दबदबा रहा है वहां महिलायें उन्हें अब कड़ी टक्कर दे रही है। पुरूषों के एकाधिकार वाले पेशों में महिलाओं का दखल लगातार बढ़ रहा है। सकारात्मक बदलाव की यह बयार महिलाओं के सशक्तिकरण और आत्मनिर्भर बनने के उनके जज्बे की खबर देती है।

सादिक खान | पन्ना

मिलेगा सम्मान, बढ़ेगी आय

शौंचालय का किया निर्माण

Fri, 24 November 2017
www.readwhere.com/read/c/23961313

महिलाओं को मिला राजमिस्त्री का प्रशिक्षण, समापन पर प्रमाण पत्र और टूल किट वितरित

राजमिस्त्री के हुनर से मिटेगी गरीबी, आय होगी दोगुनी

स्टार समाचार | पन्ना

समर्थन संस्था द्वारा स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के बेहतर क्रियान्वयन की दृष्टि से पन्ना जनपद की पंचायतों में कार्य कर रही है। इस दिशा में कार्य करते हुए संस्था ने 21 से 24 नवम्बर 2017 तक चिन्हित महिलाओं को चार दिवसीय राजमिस्त्री कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया है। इस प्रशिक्षण में मनौर, कुडार, जनकपुर, तिलगंवा एवं लक्ष्मीपुर पंचायत की 24 महिलाओं ने सहभागिता करते हुए चार दिवसीय प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया है।

प्रशिक्षण के समापन अवसर पर जिला प्रशासन की ओर से स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण की जिला समन्वयक श्रीमति जयंती अहिरवार, अतिरिक्त कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अशोक चतुर्वेदी, एसके समेले एवं पंचायत प्रकोष्ठ प्रभारी संजय सिंह बतौर अतिथि उपस्थित रहे। महिला राजमिस्त्रियों को संबोधित करते हुए अभियन्ता एसके समेले ने कहा कि अब तक राजमिस्त्री का काम केवल पुरूष करते आए है। अब आप सब प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी हैं और आप भी राजमिस्त्री है। यह राह आसन नहीं है पर लगन से काम किया जाए तो सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आप सतत रूप से कार्य करे और अभ्यास करते रहे ताकि आपकी क्षमता का विकास होता रहे। अतिरिक्त कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अशोक चतुर्वेदी ने अपने उदबोधन में कहा की प्रशासन की ओर से प्रधानमंत्री आवास एवं अन्य निर्माण कार्यों को गति देने के उद्देश्य से राजमिस्त्रियों का 45 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। आप भी उस प्रशिक्षण में सहभागिता करे ताकि आप लगातार 45 दिन काम करके अपने कौशल को और भी निखार सके। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए समर्थन संस्था के क्षेत्रीय समन्वयक ज्ञानेन्द्र तिवारी ने कहा की शासन की ओर से महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे है। शासन ने पंचायत निकायों में 50 प्रतिशत पद महिलाओं के लिए आरक्षित किए है। पर हम देखते है कि बहुत कम महिलाएं सक्रीय रूप से पंचायत प्रतिनिधि के दायित्व को निभा रही है। कार्यक्रम के अंतिम चरण में महिलाओं को अतिथियों के द्वारा प्रमाणपत्र व टूलकिट प्रदान गई। इस अवसर पर समर्थन संस्था के विषय विशेषज्ञ आशीष विश्वास, राज्य कार्यालय भोपाल से आए आदित्य वर्मा, कार्यक्रम समन्वयक राहुल निगम, आकाश श्रीवास्तव, स्वच्छता सखी कल्पना सिंह, कलेस्टर समन्वयक प्रदीप त्रिपाठी, कलेस्टर समन्वयक सपना कुशवाहा, कलस्टर समन्वयक प्रीती जैन सीपा संस्था से कार्यक्रम समन्वयक प्रदीप पिड़िहा कलस्टर समन्वयक चाली राजा पंचायत सचिव व प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिलाएं उपस्थित रही।